**बचपन के दिन वापस मिल जायें**

बड़ी सुन्दर थी ज़िन्दगी, जब थे हम बहुत छोटे

कई रिश्ते थे कठिन जरूर, मगर धागे कभी ना टूटे

जुगनू को चमकता देख, हम आज भी वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है

ना थी जिम्मेदारियां तब, और ना ही कोइ बोझ

हसी में सारा वक़्त निकल जाता, ज़िन्दगी थी सरोज

घर में नन्हों को देखकर, हम आज भी वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है

गीत अगर सुनते है, तो माँ की लोरियां याद आती है

सख्त आवाज़ कानों में पड़कर, पापा की याद दिलाती है

कोई गलती हो जाने पर, हम आज भी वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है

बचपन के दिन थे, चाँद से भी सुंदर

मन में ना आया कभी, डांट का बवंडर

खिलते सुमन को देखकर, हम आज भी वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है

प्यार ही प्यार मिलता, जब जाते हम रूठ

गुस्से में मुह फेर लेते, हो जाते सबसे दूर

पलकें भीग जाने पर, हम आज वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है

संगणक ना था, लेकिन तब भी ज़िन्दगी थी निराली

हर दिन होता ख़ुशी भरा, जैसे ईद और दिवाली

ख़ुशी के मौके पर, हम आज भी वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है

ना था विचार भेदभाव का, किसी के नन्हे मनन में

मिल बाँट के रहते सब, शांति से अमन में

अंजुमन को देखकर, हम आज भी वो दिन याद करते है

बचपन के दिन वापस मिल जायें, बस यही फ़रियाद करते है